



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

“महादेवी वर्मा के साहित्य में हिंदी-नवजागरण के सूत्र”

प्रो. (डॉ०) ज्योति किरण

हिन्दी विभाग
महिला महाविद्यालय,
किदवई नगर, कानपुर

सार — पुनर्जागरण वास्तव में बौद्धिक, मानसिक जागरण की प्रक्रिया है। यूरोप में पुनर्जागरण (Renaissance) 14वीं से 16 भाताब्दी के बीच सांस्कृतिक बौद्धिक और कलात्मक सामाजिक पुररुत्थान का आंदोलन था। इसके परिणाम स्वरूप यूरोप में मध्ययुग का अंत और आधुनिक युग की भुरुआत हुई। इसका केन्द्र इटली था, जहाँ प्राचीन ग्रीक और रोमन कला, साहित्य और दर्शन के प्रति एक राग पैदा हुआ साथ ही मानवतावाद, वैज्ञानिक सोच और यथार्थवादी कला को बढ़ावा मिला। कई वैज्ञानिक और भौगोलिक खोजें हुईं। नए समुद्री मार्ग का पता चला जिससे वैश्विक सम्बन्ध और व्यापार को नया आधार मिला। सामाजिक-सांस्कृतिक जागरण साहित्यिक पुनर्जागरण का आधार होता है, भारतीय पुनर्जागरण के संदर्भ में यह स्पष्ट देखा जा सकता है। राजा राम मोहन राय, द्वारका नाथ टैगोर, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, ताराचंद चक्रवर्ती, दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फूले जैसे मनीषी सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक सुधार आंदोलन के माध्यम से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ रहे थे। सामाजिक मानसिक जड़ता के टूटने से जीवन में प्रवाह उत्पन्न होता है। यही जीवंतता का प्रमाण है। पुनर्जागरण जीवंतता को बल देता है, गति देता है। सामाजिक संगठनों में अतिरिक्त विभिन्न भाषाओं के संतो ने भी मानवतावाद की स्थापना हेतु अथक संघर्ष किया। मानवतावाद स्वस्थ सामाजिक, सांस्कृतिक साहित्यिक परिवेश का हृदय स्थल है और उच्चतम मानवीय समाज का पोशक भी। नवजागरण भी मानवतावाद का पोशण और प्रमोशन करता है। जागृति काव्य का मुख्य प्रयोजन है। वास्तव में साहित्य हमें नव जागृति का आग्रही होता है। छायावाद की आधारस्तंभ कवयित्री महादेवी वर्मा के साहित्य में नव चेतना, नव जागृति का संदेश स्पष्ट है। महादेवी वर्मा के साहित्य में चेतना के विविध आयाम हैं जिसे विभिन्न संदर्भों में समझना आवश्यक है। महादेवी वर्मा के साहित्य को कवल दुःख, करुणा, वेदना और आँसू के माध्यम से समझना एकांगी दृष्टिकोण है।

बीज भाब्द — पुनर्जागरण, साहित्य, महादेवी वर्मा, सामाजिक समस्याएं, जागृति, चेतना, चिंतन, सरोकार

इस भोध पत्र का उद्दे"य महादेवी वर्मा के साहित्य में मौजूद नवजागरण के विभिन्न सूत्रों को प्रस्तुत करना और प्रका" में लाना है। इसके लिए महादेवी वर्मा के सृजन संदर्भ को समझना आव"यक है। महादेवी वर्मा के समग्र रचना कर्म को समझा जाए तो यह स्पष्ट है कि वेदना और आँसू के भीतर विद्रोह की ज्वाला और क्रांति की पुकार भी है। सामान्यतया महादेवी वर्मा के काव्य को वेदना की 'आह' तक सीमित माना जाता है। इसके विपरीत इस भोध पत्र का उद्दे"य महादेवी वर्मा के साहित्य में नवजागरण के सूत्र और संदर्भ को खोजना और स्थापित करना है। महादेवी वर्मा के समग्र साहित्य का अवलोकन करने से यह स्पष्ट है कि महादेवी का साहित्यिक सरोकार अत्यंत वृहत्तर है। करुणा और वेदना एक पक्ष है और इसका गूढ़ार्थ महत्वपूर्ण है। भोध पत्र की एक सीमा होती है आर इस सीमा में ही कुछ नूतन पक्षों पर प्रका" डाला जाएगा।

प्रस्तावना –

साहित्य वास्तव में नव जागृति का आग्रही होता है। यही साहित्य की पहचान है और सृजन का संकल्प भी। सामाजिक यथार्थ की अनुगूँज जब साहित्य सुनता और सुनाता है तब साहित्य भरोसा पैदा करता है। जो साहित्य मानव के लिए नव चेतना एवं नव स्फूर्ति का संचार करता है, वह कालजयी और कालातीत होता है।

साहित्य समाज को सुंदर, सुरुचिपूर्ण बनाने का एक आत्मीय अभिव्यक्ति है। चेतना नित नूतनता का प्रतीक है। दुःखवाद और करुणावाद के साए में महादेवी वर्मा का समग्र मूल्यांकन एकरेखीय व्याख्या है। छायावाद का मूल स्वर स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना जाता है। वस्तुतः काव्य का मूल स्वरूप स्थूलता के विरुद्ध ही होता है। स्थूल काव्य सूक्ष्म भावों को जगाने में असमर्थ होता है। महादेवी वर्मा के काव्य पक्ष को समझने के लिए काव्य में व्याप्त संदर्भ, संकेतों को समझना अत्यंत आव"यक है जो स्थूल से सूक्ष्म की ओर, सामान्य से वि"िश्ट की ओर ले जाता है। सूक्ष्मता वि"िश्टता को विस्तार देती है। यही काव्य का मर्म और निहितार्थ है। महादेवी वर्मा के रचनाकार व्यक्तित्व के निर्माण में आधुनिक भारत के नवजागरण की प्रेरणा प्रमुख थीं। विद्रोही और परम्पराभेदी चेतना का प्रस्फुटन महादेवी के गद्य साहित्य में प्रमुखता से व्यंजित है। लेकिन आलोचकों ने महादेवी के वैचारिक आग को वेदना के आंसुओं से लगभग बुझा दिया।

हिन्दी नवजागरण के प्रेरक बिंदु –

हिंदी नवजागरण हिंदी साहित्य और समाज में नव जागृति का वह काल था जिसमें स्वाधीनता की आकांक्षा हर दिल में पल रही थी और चेतना वृहत्तर आयामों में अभिव्यक्त हो रही थी। कविता नाटक, निबंध, प्रहसन आदि कई विधाओं का महत्वपूर्ण विकास हुआ। साहित्य में नई भौली और विशयों का सूत्रपात हुआ। पूर्वाग्रह से हटकर लोग वैज्ञानिक और तर्कसंगत तरीके से सामाजिक, धार्मिक समस्याओं पर सोचने लगे। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भी बाल विवाह, पर्दा प्रथा, अ"िक्षा और अंधवि"वास जैसी सामाजिक बुराइयों के प्रति जागृति पैदा हुई। आम लोगों में "िक्षा, विज्ञान, ज्ञान और तर्क"ीलता के प्रति

रुचि बढ़ी। नई सोच और पहल का लोगों ने स्वागत किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में प्रकाशित सरस्वती पत्रिका का योगदान भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, विप्लवपूजन सहाय, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, मुन्शी प्रेमचंद आदि लेखकों द्वारा नवजागरण को बल मिला। सभी रचनाकार सामाजिक जड़ता के खिलाफ निरंतर जागरूक करते रहे। हिंदी पत्रकारिता ने भी जनजागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोगों में अपनी भाषा और संस्कृतिक के प्रति सम्मान का भाव पैदा हुआ। आत्मगौरव के बाद ही व्यक्ति समाज और राष्ट्र को गौरव दिला सकता है। 'नवजागरण साहित्य अपने समय के परिवर्तनकारी सेनानियों का मूल्यवान उद्यम है, ऐसे सचेत और जागरूक सेनानियों का, जो सोए हुए समाज को जगा रहे थे। वे बेहतर समाज के निर्माण का संदेश देकर नवजागरण ला रहे थे। वे हमारे निकटतम अतीत के मुक्तिकामी सैनिक हैं, जिनका जीवन कठिन संघर्षों और भाहादतों से भरा हुआ था। ऐसे में सवाल विचारों का ही नहीं, उनका ईमानदार और सकर्मक समर्पण का भी है।'¹

महादेवी वर्मा के साहित्य में नवजागरण के सूत्र –

महादेवी वर्मा हिंदी नवजागरण की मूल आत्मा, मूल स्वरूप को अपने साहित्य में उद्घाटित करती है। आत्म जागृति के बिना साहित्यिक, सांस्कृतिक जागरण बेबुनियादी अवधारणा है। महादेवी आत्म जागृति को नव-जागरण तक विस्तारित करती है यही कारण है कि बिना किसी दावे और दंभ के महादेवी नव-जागरण के विमर्श में खुद-ब-खुद शामिल होती गई। नवजागरण के सरोकार महादेवी के साहित्य से जुड़ते गए। पीड़ा हर सृजन के मूल में है क्योंकि पीड़ा का सम्बन्ध अनुभूतियों से होता है। यह अनुभूति व्यक्तिगत पीड़ा के लिए भी हो सकती है और समष्टिगत पीड़ा के लिए भी। जब सम्पूर्ण सृष्टि के लिए, समष्टि के लिए पीड़ा हो तो वह उदात्त रूप से काव्य एवं कला के रूप में अभिव्यक्त होती है। काव्य का निर्माण पीड़ा से ही माना गया है – “वियोगी होगा पहला कवि। आह से उपजा होगा गान। उमड़ कर आँखों से चुपचाप/बही होगी कविता अनजान”² महादेवी के पास एक अत्यंत संवेदनशील वेदना तंत्र है जो अपनी मूल प्रतिज्ञा में मानव-मुक्ति की आकांक्षा से प्रेरित है।

नवजागरण की मूल्य-चेतना ने महादेवी के सृजन में प्रलय से जूझने की भाक्ति और सामर्थ्य को जन्म दिया है। सामाजिक भेदभाव, विसंगतियों से टकराना और एक समरस समाज के निर्माण हेतु संकल्पबद्ध होना रचनाकार के लिए आवश्यक है। महादेवी वर्मा ने अपने 'मातृभूमि देवोभव' निबंध में लिखा है – “अंधकार में मेरा विश्वास नहीं है। अंधकार होता तो बहुत है। अंधकार विस्तार में तो होता है, परंतु उससे एक दीपक भी संघर्ष कर सकता है। एक छोटे से दीपक को भी अंधेरा नहीं निगल पाता, इसलिए अंधकार की चिंता न करें। आपकी दृष्टि में ऐसा आलोक होना चाहिए कि आप, उस पथ को आलोकित कर सकें, प्रकाश कर सकें”³ महादेवी वर्मा के काव्य और साहित्य को समझने के लिए यह संदर्भ महत्वपूर्ण है। एक छोटे से दीपक को भी अंधेरा निगल नहीं पाता। लेकिन एक छोटा सा दीपक भी अंधेरे से लड़ लेता है। इसका संदेश यह है कि एक छोटा सा प्रयास भी बड़ा परिणाम ला सकता है। सही दिशा में किया गया छोटा प्रयास भी कभी निरर्थक नहीं होता। महादेवी वर्मा के काव्य में दीपक का संदर्भ बार-बार आया है। दीपक नव चेतना, नव संकल्प का सृजन प्रतीक है। सृजन साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्र में नूतन चेतना को व्यंजित करता है। यह दीपक मन के अंधेरे को भी दूर करता है और बाहर के अंधेरे को भी।

यही कारण है कि महादेवी वर्मा के काव्य में दीपक का संदर्भ बार-बार आया है “यह मंदिर का दीप इसके नीरव जलने दो”⁴ यह दीप प्रहरी है, चेतना को पारद”⁵ बनाने का उपक्रम। स्वाधीनता आंदोलन के समय दे”⁶भक्ति, राष्ट्रीयता का जो उज्ज्वल प्रवाह उमड़ रहा था महादेवी वर्मा के काव्य में भी इस प्रवाह को देखा जा सकता है। महादेवी वर्मा लिखती हैं— “मातृभूमि देवो भव, यह मातृभूमि भी आपकी देवता हो। आज के युग में देवता आपको चाहिए। यदि आप चाहते हैं कि इस सुंदर दे”⁷ को, इस महान संस्कृति को आप सुरक्षित रखें, आपको देखकर कोई कहे कि यह भारतीय है, कोई माने कि जीवन के मूल्य इसके पास हैं तो आप बहुत बड़ा कार्य करेंगे”⁸ काव्य के साथ-साथ महादेवी का स्वयं व्यक्तित्व भी एक मिसाल है। उनका व्यक्तित्व आधुनिकता और परम्परा का पर्याय था। उनका व्यक्तित्व किसी दीप”⁹खा से कम न था। प्रसिद्ध आलोचक प्रभाकर श्रोत्रिय लिखते हैं — “महादेवी वह स्त्री है जो युग-युग से मूक, दग्ध, आहत और भीगी भारतीय स्त्री की ऐसे वक्त उठी आवाज थी जब औरत की स्वाधीनता और उसके विम”¹⁰ का प्रायः कोई बोल न था। महादेवी ने स्त्री की अस्मिता के लिए अपनी तरह से संघर्ष किया। ‘श्रृंखला की कड़ियों’ के निबंध इसके पुख्ता प्रमाण है। महादेवी की अभिव्यक्ति में एक गहरी अपील और खरापन इसलिए भी है कि उन्होंने स्वयं अपने जीवन में यह दुःख झेला था, उनकी सर्जक आत्मा में उसे वृहत् और उदात्त बनाया।”¹¹ स्वस्थ समाज के लिए स्वस्थ पारिवारिक मूल्य, मान्यताएं भी आव”¹²यक है। तमाम मानवीय विम”¹³ मानव और मानवता के बेहतरी के लिए है। मानवता से इतर किसी भी विम”¹⁴ का कोई अर्थ नहीं होता। सभी मूल्य मान्यताएँ सामाजिक संस्थाओं, संगठनों को मजबूत और महत्वपूर्ण बनाने के लिए है। ग्रियर्सन का विचार है कि “स्वच्छन्तावाद एक मनोद”¹⁵ है, जो निरंतर हमारे साथ रहती है। मानव इतिहास में संयम –संतुलन और संघटन के युग भी होते हैं और अस्थिरता, विघटन तथा आध्यात्मिक मंथन के भी।”¹⁶ हर दौर में हर स्तर पर उदात्त और अनुदात्त दोनों धाराएँ चलती रहती है। साहित्य और संस्कृति अपनी विभिन्न सरोकारों से समाज का उदात्तीकरण करते हैं। समाज को सुधड़ और सुंदर बनाने की यह सतत प्रक्रिया है। “महादेवी के काव्य में एक सुधरापन है, एक संस्कारित आत्मा की सुगढ़ता है जिसमें बनावट का ले”¹⁷ नहीं, दिखावा नहीं, जो है उसे भी छिपाना, एक अजीब सा प्रद”¹⁸निहीन भाव। इसीलिए उन्हें व्यक्त के पीछे-छिपे अव्यक्त की कवयित्री कहना चाहिए और यही पहचान भी है उस करुणानिधि की जो उनके भीतर सदा बैठा रहता है।”¹⁹ जागृति जीवन के सभी पक्षों को रूपांतरित करती है, प्रभावित करती है। साहित्य एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है। साहित्य और काव्य कलाएँ मूलतः सृजनात्मक होने के कारण सच्चे कलाकार को नवनिर्माण में प्रवृत्त करती हैं। भारतीय समाज में संध्या के समय दीप जलाकर मंगल प्रार्थना करने की परम्परा है। अंधेरे से टकराने की यह प्रक्रिया अत्यंत ललित है। महादेवी वर्मा लिखती हैं

“तम ने धोया नम पंथ सुवासित हिम जल से

सूने ऑगन में दीप जला दिए हिल-मिल से”²⁰

दीप यहाँ हमें”²¹ प्रतिरोध को व्यंजित करता है। सूक्ष्म प्रतिरोध भी बहुत बदलाव का कारक बन सकता है। छोटा सा प्रयास भी परिवर्तन का आगाज कर सकता है। मन का अंधेरा अधिक खतरनाक होता है जो दिन के उजाले से भी महरूम कर देता है। “महादेवी में आकर भारतीय नारी मन ने न केवल परिवार की चहारदीवारी को तोड़कर आत्म प्रसार करना चाहा है, बल्कि बौद्धिक सजगता से पुरानी

संकीर्णताओं के कारणों को भी समझना चाहा है। उनके कवि-स्वभाव ने हृदय कपाट खोलकर 'विराट' की पुकार लगाई है। और यह पुकार भी संकीर्णताओं के विरोध में ही उठी है।¹⁰ वस्तुतः महादेवी की अनुभूति और सृजन के मूल में ऑसू भी है और आग भी है। जो दृश्य और स्पष्ट है वह अंतिम सत्य नहीं है, जो अदृश्य है वही मूल है। महादेवी स्वयं लिखती हैं – “मेरे निःवासों में बहती रहती झंझावत/ऑसू में दिन-रात प्रलय के घन करते उत्पात/कसक में विद्युत अंतर्धान”¹¹ तूफान और झंझावतों से लड़ना यथास्थिति को बदलने का संकल्प है। महादेवी का यह संकल्प ऑसू में भी द्रष्टव्य है और आग में भी। दरअसल “भारतीय नवजागरण की भाक्ति से जन-मन में जैसे-जैसे मुक्ति की आकांक्षा बलवती होती गई, वैसे-वैसे ‘छायावाद’ का अर्थ संदर्भ विस्तृत होता गया और उसकी अंतर्वस्तु और रूप-विन्यास में नवीन सज्जनात्मक दीप्ति का प्रकाश फैलता गया”¹² सांस्कृतिक जागरण छायावाद का एक विराट पक्ष है। छायावाद के सभी कवियों के काव्य में इस जागरण के स्वर हैं। सांस्कृतिक चेतना से व्यक्ति समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूक और जिम्मेदार हो जाता है। साहित्य इस जिम्मेदारी के लिए नागरिक तैयार करता है। यही साहित्य की उपयोगिता भी है और महत्ता भी। वर्तमान दौर में सामाजिक-सांस्कृतिक विखंडन चरम पर है। इसलिए नवजागरण हर दौर की माँग होती है। जब सामाजिक-सांस्कृतिक विकृतियाँ मानवता के सामने चुनौती बन जाती है तब साहित्य लोगों को जगाने का काय करता है। “महादेवी वर्मा में भारतीय सामंती संस्कारों और मूल्यों के प्रति खुला विद्रोह पद्य और गद्य दोनों में मिलता है। नारी के कवित्व मूलक आदर्शिकरण में सुख से जीने का यहाँ भाव नहीं है और न काम भास्त्रीय नारी सम्बंधों के प्रति स्वीकृति का भाव। काव्य भास्त्रीय नायिका-भेदी दृष्टि का पूरा टाट महादेवी की कविता में पलटता देखा जा सकता है। इन नारी-मन के चिंतन और चिंति में जो ‘प्रभु’ या ‘प्रिय’ या ‘करुणानिधि’ बसा हुआ है उसमें भी पति का मध्ययुगीन आतंक नहीं है। आधुनिक जीवन और चिंतन से उत्पन्न बराबरी का, समानता का बंधुता का भाव है”¹³ करुणा का भाव सिर्फ रुदन ही पैदा नहीं करता अपितु मनुष्य को परिस्कृत और भुद्ध करके उदात्त बना देता है। सामाजिक उदात्तीकरण नवजागरण का आधार भी होता है और उत्स भी। नवजागरण सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों और अवधारणाओं को आम जन तक प्रसारित प्रचारित करता है। आज त्रासद, विध्वंसक समय के साक्षी हैं हम। व्यक्तिगत स्वार्थ और हित में इंसान हैवान हो चुका है। रिश्ते की मर्यादा गरिमा सब भूल चुके हैं। अखबार की खबरें बताती है कि पारिवारिक, सामाजिक क्रूरता अभूतपूर्व है। सूचना की क्रांति से ऊँची और थकी हुई पीढ़ी आज निश्चुर निर्मम खबर में भी एक ठंडे उल्लास में जी रही है। जीवन के हर पहलू को बाजार में उतारने को उद्धत यह पीढ़ी आज बाजार के हवाले है। रिश्ते, मूल्य, मर्यादाएँ सब बेमानी और बेनामी हो चुके हैं। आज का थका हुआ, ठहरा हुआ समाज अवांक्षित क्रियाकलापों में अधिक गतिशील है। वर्तमान पीढ़ी सांस्कृतिक दृष्टि से कमजोर पीढ़ी है इसलिए जीवन का बहाव नीचे की ओर है। महादेवी वर्मा अपने काव्य में जागने, ऊपर उठने का आह्वान करती हैं – “जाग तुझको दूर जाना/ कह न ठंडी सांस में अब भूल वह जलती कहानी/आग हो उर में तनी दृग में सजेगा आज पानी/हार भी तेरी बनेगी मानिनी जय की पताका। राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निहानी/ है तुझे अंगार-”¹⁴ यथा पर मृदुल कलियाँ बिछाना/ जाग तुझको दूर जाना।¹⁴ महादेवी वर्मा का जागरण अत्यंत ललित और मधुर है। बगैर ठोकर दिए जगाना भी अद्वितीय कला है – “झंझा है दिग्भ्रांत रात की मूर्छा गहरी/आज पुजारी बने, ज्योति का यह लघु प्रहरी/ जब तक लौटे दिन की हलचल/तब

तक यह जागेगा प्रतिपल/रेखाओं में भर आभा— जल/ दूत सांझ का इसे प्रभाती तक जलने दो¹⁵ एक दीपक निस्वार्थ भाव से जिए तो समाज अधिक आलोकित, प्रकाशित हो सकता है। दीपक स्वयं जलकर रौशनी देता है उसी प्रकार त्याग से ही समाज में उजास फैल सकता है। अन्याय, अत्याचार, अज्ञान और रूढ़ियों को दूर करने के लिए निरंतर धैर्यपूर्वक श्रम करना आवश्यक है। आज आत्मलीनता और आत्ममुग्धता की पराकाश्टा है। इसलिए नवजागरण और नवजागरण कालीन साहित्य बेहतर समाज और संस्कृति के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है।

निश्कर्ष –

महादेवी वर्मा के साहित्य को विविध संदर्भों से समझने पर यह स्पष्ट होता है कि इनके साहित्य के मुख्य स्वर में भारतेन्दु, मैथिलीकरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, नवीन जी की सांस्कृतिक परम्परा धड़क रही है। साहित्य के साथ-साथ व्यावहारिक धरातल पर भी महादेवी ने सामाजिक जड़ता को खत्म करने का प्रयास किया। 'साहित्यकार संसद भवन' का निर्माण इसका ज्वलंत मिसाल है। समस्याओं से टकराना ऐसा होता है कि टकराहट महसूस नहीं हाती लेकिन स्वस्थ समाज की जमीं तैयार हो जाती है। महादेवी के काव्य में अकेलापन आत्मिक भाक्ति और संकल्प प्रदान करता है। संकल्प परिवर्तन का आधार है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शिरीष कर्मेन्दु, नवजागरण का निमित्त, अनन्य प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2022 पृ० 104
2. पंत सुमित्रा नंदन, पल्लव, भारती भंडार प्रकाशन, वर्ष 1926, पृ० 03
3. वर्मा महादेवी, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एण्ड सन्स, पृ० 16
4. वर्मा महादेवी, यामा, लोकभारती प्रकाशन, 1940 पृ० 54
5. वर्मा महादेवी, भारतीय संस्कृति के स्वर, राजपाल एण्ड संस, 2017, पृ० 17
6. श्रात्रिय प्रभाकर, कवि परम्परा, तुलसी से त्रिलोचन भारतीय ज्ञानपीठ, 2013 पृ० 116
7. पालीवल, कृष्णदत्त, नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचना-कर्म स्त्री-विमर्श के स्वर, किताब घर, नयी दिल्ली, 2008, पृ० 179
8. श्रोत्रिय प्रभाकर, कविपरम्परा, तुलसी से त्रिलोचन, भारतीय ज्ञानपीठ, 2013, पृ० 115
9. वर्मा महादेवी, नीरजा, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1941, पृ० 63
10. पालीवल कृष्णदत्त, नवजागरण और महादेवी का रचनाकर्म स्त्री विमर्श के स्वर, किताब घर, नयी दिल्ली, 2008, पृ. 95
11. वर्मा महादेवी, नीरजा इंडियन प्रेस, इलाहाबाद 1941 पृ. 67
12. पालीवाल कृष्णदत्त, नवजागरण और महादेवी वर्मा का रचनाकर्म स्त्री-विमर्श के स्वर, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2008, पृ०. 53
13. वही पृ० 96
14. वर्मा महादेवी, अंतरा भाग 1, NCERT कक्षा 11 संस्करण 2013, पृ.135
15. वर्मा महादेवी, दीपशिखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1942, पृ. 63